समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 | अ

जैन विद्या - भाग - 7

(भिक्षु विचार दर्शन)

समय : ½ घण्टे | प्रश्न पत्र : प्रथम | पूर्णांक 30

रोल नं. अंको में .....

शब्दों में.....

नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. आचार्य भिक्षु का जन्म हुआ–

   (अ) सन्1783 (ब) वि.सं. 1817

   (स) सन् 1817 (द) वि.सं. 1783 ( )

2. राजस्थान में मारवाड़ी का अर्थ हैं–

   (अ) राजस्थानी (ब) जोधपुर राज्य का वासी

   (स) थली का (द) जयपुर राज्य का वासी ( )

3. गुरुदेव! आप लौकिक देवताओं की पूजा का खंडन करते हैं, अगर वे कुपित हो गये तो? स्वामीजी से ऐसा किसने कहा?

   (अ) खेतसीजी (ब) भारमलजी

   (स) हेमराजजी (द) हरनाथजी ( )

4. प्राणियों में तीन एषणाएं हैं। उनमें पहली है–

   (अ) कामेषणा (ब) भोगेषणा

   (स) प्राणैषणा (द) कोई नहीं ( )

5. जो योगयुक्त आत्मा है, जो सर्वत्र समदर्शी है, वह सब जीवों में अपनी और अपनी में सब जीवों की आत्मा देखता हे–यह कहा था–

   (अ) भगवान बुद्ध ने (ब) भगवान महावीर ने

   (स) श्री कृष्ण ने (द) गौतम ने ( )

6. खाद्य पेय में मिलावट का विरोध आचार्य तुलसी ने किसके माध्यम से किया–

   (अ) अणुव्रत (ब) प्रेक्षाध्यान

   (स) जीवन विज्ञान (द) तेरापंथ ( )

7. भिक्षु-विचार-दर्शन ग्रन्थ के कार्य में महाप्रज्ञजी के सहयोगी रहे हैं-
(अ) मुनि श्रीचंदजी (ब) मुनि बुद्धमलजी
(स) मुनि नगराजजी (द) मुनि सागरमलजी ( )

8. व्यक्ति में सबसे बड़ा बल होता हैं-
(अ) श्रद्धा का (ब) विवेक का
(स) ज्ञान का (द) चिंतन का ( )

9. चातुर्मास काल में ही आचार्य भिक्षु को विहार करना पड़ा-
(अ) कोठरिया से (ब) नाथद्वारा से
(स) बगड़ी से (द) बालोतरा से ( )

10. असंयमी को दान देने में धर्म, अधर्म दोनों होते हें। यह सिद्धान्त है-
(अ) लोकोत्तर दान का (ब) मिश्र दान का
(स) अनुकम्पा दान का (द) धर्म दान का ( )

(B) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें-

(1) अहिंसा का ध्येय जीव रक्षा है। ( )
(2) सावद्य दान संसार संवर्द्धन का हेतु है। ( )
(3) अभयदान दया या अहिंसा का ही दूसरा नाम है। ( )
(4) संयमासंयमी मोक्ष दान का अधिकारी नहीं है। ( )
(5) मर्यादाओं के निर्माण में सूझ आचार्य भिक्षु की थी सहमति सबकी। ( )
(6) भगवान के संघ में मुनि गण के व्यवस्थापक को गणि कहा जाता था। ( )
(7) भगवान के समय संघ में 35000 साध्वियाँ थी। ( )
(8) ओध निर्युक्त के अनुसार आचार्य और उपाध्याय भिन्न होने चाहिए। ( )
(9) साधु का वेश धारण करने वाले काठ की फूटी हुयी नौका के समान होते हैं। ( )
(10) अनेक शासकों द्वारा चालित राज्य गणतंत्र कहलाता हैं। ( )

(C) रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

(1) हिंसा और अहिंसा का मूल स्त्रोत आत्मा की..... और.....प्रवृति है।
(2) आचार्य भिक्षु के ग्राम विहार सूत्र को हमारे.....ने क्रियान्वित किया है।

(3) चारित्र को निभाने की अक्षमता, स्वभाव की अयोग्यता, ...
और.....आदि–आदि गण से पृथक होने के कारण हैं।

(4) साधु समुदाय के लिए.....और.....
ये तीन शब्द व्यवहृत होते हैं।

(5) मनमुटाव का प्रमुख कारण है.....।

(6) गण में रहते हुए भी दूसरे साधुओं के मन में भेद डालकर जो गुटबन्दी करते हैं–वे.....हैं।

(7) साधु किसी भी.....पर ममत्व न रखें। यह आगमिक सिद्धान्त हैं।

(8) आग्रह हीनता, नम्रता और सत्य शोध की सतत साधना हैं.....

(9) भगवान के संघ में संयम की शुद्धि और अभ्यास के लिए प्रेरणा देने का काम.....का होता था।

(10) .....का सर्वोपरि ध्येय मोक्ष होता हैं।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **ब**

जैन विद्या - भाग - 7

(भिक्षु विचार दर्शन)

समय : 2½ घण्टे प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 70

नोट :– उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) संक्षिप्त उत्तर दें– 10×2=20

1. आचार्य भिक्षु का जीवन किन तीन प्रकार की विशिष्ट अनुभूतियों का पुंज हैं?
2. सावद्य दया और दान मुक्ति के मार्ग क्यों नहीं?
3. क्या धन से धर्म हो सकता हैं? हां तो क्यों? नहीं तो क्यों?
4. संसार क्या हैं? इसकी आवृत्ति कैसे होती रहती हैं?
5. आचार्य भिक्षु के जन्म, द्रव्यदीक्षा, भावदीक्षा, स्वर्गवास के संवत लिखें।
6. आचार्य भिक्षु की समूची दान मीमांसा का सार तीन चार वाक्यों में बताएं।
7. एकेन्द्रिय को मारकर पंचेन्द्रिय का पोषण करना धर्म है या नहीं। क्यों?
8. आचार्य भिक्षु ने हाथ में कम्पन होने के क्या कारण बताए?
9. आचार्य भिक्षु ने उत्तराधिकार पत्र में कौनसे दो नाम लिखे। फिर एक को क्यों हटा दिया।
10. आपका यह संघ कब तक चलेगा। किसी के पूछने पर आचार्य भिक्षु ने क्या उत्तर दिया?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें– 10×5=50

1. गुटबंदी को आचार्य भिक्षु ने साधना के लिए सद्योघाती आतंक क्यों कहा हैं?
2. स्वामीजी व्यक्तिगत आलोचना से दूर थे। संबंधित प्रसंग द्वारा स्पष्ट करें।
3. साध्य और साधन की एकता के विचार को आचार्य भिक्षु ने क्या सैद्धान्तिक रूप दिया।
4. आचार्य भिक्षु के हृदय–परिवर्तन के सिद्धान्त को समझाएं।
5. एक महाव्रत के टूटने पर सभी महाव्रत टूट जाते हैं। कैसे?
6. आचार्य भिक्षु की शासन–प्रणाली को एकतंत्र और जनतंत्र का समन्वय कैसे कह सकते हैं?
7. आचार्य भिक्षु के अनुशासन का उद्देश्य क्या था?
8. मर्यादा क्या है? इनका मूल्य क्या हैं?
9. आचार्य भिक्षु सेवा को बहुत महत्व देते थे। उनके सेवा भाव पर दृष्टि डालें।
10. आचार्य भिक्षु ने विनीत–अविनीत की क्या परिभाषा बताई?
11. भाई किशोरलाल, घनश्यामदास, मश्रुवाला, गांधीजी की सबसे बड़ी देन क्या मानते थे?

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **अ**

जैन विद्या - भाग - 7

(जीव-अजीव)

समय : ½ घण्टे प्रश्न पत्र : द्वितीय पूर्णांक 30

रोल नं. अंको में .....

शब्दों में.....

नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. 7 प्राण होते हैं–
   (अ) 1 लव (ब) 1 स्तोक
   (स) 1 घड़ी (द) 1 उच्छवास निश्वास ( )
2. कच्चे आम से अनंत गुण कसैला रस होता हैं–
   (अ) कृष्ण लेश्या का (ब) कापोत लेश्या का
   (स) नील लेश्या का (द) तेजो लेश्या का ( )
3. कलपोपत्र देवों में आभियोग्य देव होते हैं–
   (अ) नगरवासी के समान (ब) अत्यंज के समान
   (स) दास के समान (द) सैनिक के समान ( )
4. जिन पक्षियों के पंख सदा खुले या विस्तृत रहते हैं उनको कहते हैं–
   (अ) समुद्र पक्षी (ब) वितत पक्षी
   (स) रोम पक्षी (द) चर्म पक्षी ( )
5. वह वनस्पति जो बीज से उत्पन्न हो उसे कहतें हैं–
   (अ) पर्व बीज (ब) मूल बीज
   (स) अग्र बीज (द) बीज रुह ( )
6. भिन्न–भिन्न कर्म दलों में परमाणुओं की संख्या का न्यूनाधिक होना कहलाता हैं–
   (अ) स्थिति बंध (ब) प्रकृति बंध
   (स) प्रदेश बंध (द) अनुभाग बंध ( )
7. मोहनीय कर्म उत्कृष्ट रूप से आत्मा के साथ संबंधित रह सकता हैं–
   (अ) 40 क्रोड़ क्रोड़ सागर (ब) 30 क्रोड़/क्रोड़ सागर
   (स) 15 क्रोड़/ क्रोड़ सागर (द) 70 क्रोड़/क्रोड़ सागर ( )

8. निंदा करने से आत्मा के साथ चिपकने वाले पुद्गल समूह को कहते हैं–
(अ) अभ्याख्यान पाप (ब) रति–अरति पाप
(स) पर–परिवाद पाप (द) पैशुन्य पाप ( )

9. आत्मा की जो आभ्यांतर प्रवृत्ति होती हैं। उसे कहते हैं–
(अ) योग (ब) निर्जरा
(स) बंध (द) अध्यवसाय ( )

10. किस शरीर के अंगोपांग नहीं होते–
(अ) आहारक (ब) वैक्रिय
(स) कार्मण (द) औदारिक ( )

(B) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें–

(1) जीव का अर्थ है–प्राण धारण करने वाला। ( )

(2) ऊपर के देवों में नीचे के देवों की अपेक्षा गतिगमन क्रिया ज्यादा होती हैं। ( )

(3) तीन घुमाव वाली चार समय की वक्रगति में पहला–तीसरा समय अनाहारक तथा दूसरा–चौथा समय आहारक होता हैं। ( )

(4) तैजस शरीर को विद्युत शरीर भी कहते हैं। ( )

(5) संसार में परिभ्रमण कराने वाला कर्म है तो मुक्त कराने वाला भी कर्म। ( )

(6) मिथ्यादृष्टि व्यक्ति की क्षायोपशमिक दृष्टि का नाम भी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान हैं। ( )

(7) लक्ष्य के प्रतिकूल चलने वालों की प्रशंसा करना पर पाषण्ड संस्तव हैं। ( )

(8) सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति शुक्ल ध्यान का अंतिम प्रकार हैं। ( )

(9) जिस पुद्गल समूह से हमारा शरीर बनता हैं उसे शरीर वर्गणा कहतें हैं। ( )

(10) मुक्त जीवों में द्रव्य प्राण, भाव प्राण दोनों ही नहीं होते। ( )

(C) रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

(1) हिंसा दो प्रकार की हैं.....और.....

(2) पुण्य, पाप और बंध ये.....की अवस्थाएं हैं।

(3) अन्य दार्शनिक जिन मूर्तिमान वस्तुओं के लिए भौतिक शब्द का प्रयोग

करते हैं जैन दर्शन उनके लिए.....शब्द का प्रयोग करता हैं।

(4) प्रत्येक द्रव्य की पर्यायाएं.....होती हैं।

(5) अविभाज्य काल का नाम.....हैं।

(6) असंख्य योजन जितने क्षेत्र को.....कहते हैं।

(7) एक इन्द्रिय वाले जीव.....पर्याप्तियों के अधिकारी होते हैं।

(8) जिससे आत्म स्वरूप की उन्नति एवं अभ्युदय हो उसे..... कहते हैं।

(9) शीत और स्निग्ध स्पर्श की बहुलता से.....होता हैं।

(10) रूप पौद्गलिक हैं। इसके दो अर्थ है..... और .....।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018-19 **ब**

जैन विद्या - भाग - 7

(जीव-अजीव)

समय : 2½ घण्टे प्रश्न पत्र : द्वितीय पूर्णांक 70

नोट :- उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) संक्षिप्त उत्तर दें- 10X2=20

1. छाया क्या हैं?
2. मिथ्यात्वी के दो प्रकार कौन-कौन से हैं?
3. बारह देवलोकों के नाम लिखें।
4. अधर्म और पाप में क्या अन्तर हैं।
5. कार्मण योग किसे कहते हैं।
6. आभ्यान्तर निर्वृति द्रव्येन्द्रिय और उपकरण द्रव्येन्द्रिय में क्या भेद हैं?
7. किस-किस प्राण की कौन-कौन सी पर्याप्ति कारण हैं?
8. कौन से जीव अनपर्वतनीय आयु वाले होते हैं?
9. मन का परिमाण क्या हैं?
10. पद्मलेश्या और शुक्ल लेश्या के परिणाम लिखें।

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें- 10X5=50

1. साधु के धर्मोपकरण, वस्त्र, पात्र और पुस्तकें परिग्रह क्यों नहीं?
2. श्रावक के 12 व्रतों का सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से क्या महत्व हैं बताएं। चौथे व्रत से लेकर आठवें व्रत तक का।
3. छहों द्रव्यों के उपकारों को एकत्र करने से समूचे विश्व का संस्थान हमारी आँखों के सामने आ जाता हैं। यह उपकार क्या हैं?
4. आधार कितने पदार्थ हैं? आधेय कितने?
5. शुक्ल ध्यान के कितने भेद हैं? किन्हीं दो का वर्णन करें।
6. प्राणातिपात आदि 15 आश्रव योग आश्रव के भेद हैं फिर प्राणातिपातविरमण आदि 15 संवर अयोग संवर के भेद न होकर व्रत संवर के भेद क्यों?
7. इन्द्रिय ज्ञान, चक्षु-अचक्षु दर्शन, इन्द्रिय पर्याप्ति और इन्द्रिय प्राण में क्या अन्तर हैं?
8. कर्म जड़ है फिर वे यथोचित फल कैसे दे सकते हैं?
9. गुणस्थानों का कालमान लिखें।
10. पाँच चारित्र कौनसा बोल हैं? संक्षिप्त जानकारी दें।
11. आत्मा के आठ गुण कौन-कौन से हैं? उनको रोकने वाले कर्म कौनसे हैं?